चरन को अंग तिनमें नख अंग

सखीरी तेज भर्‌यो आकास लों, नख जोत निकसी चीर।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सखी! श्री राजजी महाराज के नख के जोत की किरणें आकाश तक चीरती हुई चली जाती हैं, लगता है कि गहरे नीले सागर के बीच एक स्वच्छ निर्मल जल की नहर बहती आ रही है।

रंग केते कहूं चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।। २ ।।

चरण कमलों के रंग का कहां तक वर्णन करूं? यह गिनती में ही नहीं आते। इसी वास्ते ही खेल दिखाया है कि रूहें संसार में बैठकर उसकी जोत का अनुभव कर सकें।

प्यारे पांउं मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को।। ३ ।।

मेरे धनी के चरणों की उंगलियां और अंगूठे के नखों को देखो जो मेरे दिल में विराजमान हैं, इसलिए मेरे दिल को अर्श कहा है।

दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर।
नख लगते सिर अंगुरी, ए जोत कहूं क्यों कर।। ४ ।।

दो अंगूठों और आठ उंगलियों पर नख शोभा देते हैं। यह नख उंगलियों के सिरे पर शोभा देते हैं। इनकी जोत का कैसे वर्णन हो?

चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां।
लाल रंग माहें सोभित, अतंत उज्जलियां।। ५ ।।

चरण के अंगूठे और उंगलियां पतली हैं। यह उज्ज्वल लाल रंग की शोभा देती हैं।

देखूं एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोऊ पाए।
कोमल सलूकी मिल रही, ए छब फब कही न जाए।। ६ ।।

एक-एक उंगली को देखती हूं तो दोनों चरण कमलों की आठों उंगलियों की सलूकी और कोमलता की छवि अत्यन्त सुन्दर लगती है। यह कहने में नहीं आती।

दोऊ पांउं बड़ी दो अंगुरी, अंगूठों बराबर।
तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुन्दर।। ७ ।।

दोनों चरण कमलों की दो उंगलियां बड़ी हैं जो अंगूठों के साथ में हैं। उनसे तीन उतरती हुई कोमल हैं। यह सुन्दर शोभा देती हैं।

झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख।। ८ ।।

सभी उंगलियों के नख के नूर बराबर झलक रहे हैं। नख की शोभा और सलूकी की जोत इस जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास।। ९ ।।

नखों की जोत बेशुमार है। इसको किस तरह से बताएं? मेरे मुख से तो इतना ही कहा जाता है कि इसकी किरणें आकाश तक जाती हैं।

जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत।
ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत।। १० ।।

उंगलियों की सुन्दरता और नखों के जोत की सुन्दरता और प्रकाश की शोभा शब्दों में नहीं आती।

तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर।। ११ ।।

जब भी देखते हैं तो इन नखों का तेज और जोत का कुछ नया ही रूप होता है। इस तरह शोभा और सुन्दरता भी कुछ और ही हो जाती है। श्री राजजी महाराज के अंगों जैसा कोई नमूना है ही नहीं, तो कैसे बताएं?

जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक।। १२ ।।

जोत में एक ही रंग दिखाई देता है, परन्तु शोभा और सुन्दरता में अनेक गुण दिखाई देते हैं। शोभा में रंगों की नरमाई की जोत है। कई तरह के मीठे रसों का अनुभव होता है।

सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए।
सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए।। १३ ।।

शोभा में बनावट और सुख देने वाली खुशबू है। इस सुख से प्रेम और कई तरह की खुशी मिलती है। यह यहां की जबान से वर्णन में नहीं आ सकती।

अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए।
कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए।। १४ ।।

परमधाम के सुख की यह खास बातें हैं जो सपने की वाणी से नहीं कही जा सकती हैं। जो आत्मा जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हो गई हो, उसको ही इसका कुछ अनुभव होता है।

महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए।
पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से श्री महामतिजी कहती हैं कि आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को धो-धोकर पीती हैं। पीकर जो रस लेती हैं, उसके समान दूसरा कोई सुख नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २९१ ॥

चरन हक मासूक के उपली सोभा

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।। १ ।।

मेरी रूह को बार-बार श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को देखने की चाहना लगी है। जब श्री राजजी महाराज के चरण दिल में आ गए तो आत्मदृष्टि खुल गई।

Nijanand App